मोदी की सत्ता का फ़िलहाल कोई विकल्प नहीं

नीलिमा झा

देश की राजनीति आज जिस मोड़ पर आ गई है, उसके संकेत भयावह हैं। नरेंद्र मोदी सरकार एक के बाद एक जनविरोधी नीतियां लागू करती जा रही है और विरोधी संसद में गतिरोध पैदा करने के सिवा और कुछ भी नहीं कर पा रहे हैं। कांग्रेस शोर.शराबा मचाने के सिवा और कुछ भी ठोस नहीं कर पा रही है। वहीं, बिहार में जीत के बाद लालू प्रसाद यादव और नीतीश कुमार ने भी चुप्पी साध ली है। पहले लालू ने घोषणा की थी कि वे वाराणसी से मोदी के खिलाफ अभियान छेड़ेंगे और विरोधी दलों को एकजुट करेंगे। लेकिन ऐसा कुछ भी देखने में नहीं आया। इससे मोदी का मार्ग निष्कंटक बना हुआ है। वामपंथी दल भी इस सरकार के खिलाफ कोई आंदोलन शुरू कर पाने में नाकामयाब रहे। यद्यपि आम लोगों के बीच मोदी सरकार की लोकप्रियता में तेजी से कमी आई है। इसका पता कई उपचुनावों से चलता है। गुजरात में निकाय चुनावों में भाजपा को नुकसान हुआ है। मध्य प्रदेश में भी यह नुकसान साफ दिखाई पड़ता है। कांग्रेस को बढ़त मिलती दिख रही है। आज मोदी सरकार के विरुद्ध असंतोष इतना गहरा गया है कि कुछ राजनीतिक प्रेक्षकों का मानना है कि यदि आज चुनाव करा दिए जाएं तो भाजपा चारों खाने चित हो जाएगी। यह सही प्रतीत होता है। भाजपा का यह हाल हमेशा होता रहा। लेकिन अभी तो मोदी सरकार को दो साल भी पूरे नहीं हुए। टर्म पूरा कर जब मोदी सरकार जाएगी,

तब तक देश खोखला हो जाएगा। लंबे समय तक कांग्रेस ने इस देश को लूटा। इतने घोटाले किए कि जनता ने विकल्प के अभाव और हताशा में भाजपा को विजय दिला दी। कांग्रेस ने लूट में थोड़ी कसर छोड़ दी थी। वह अब मोदी सरकार पूरी कर रही है। खास बात ये है कि कांग्रेस की जिन नीतियों का विरोध कर भाजपा सत्ता में आई, अब उन्ही नीतियों को पूरी नंगई के साथ लागू कर रही है। रेलवे को इस सरकार ने अपनी निजी जागीर समझ लिया है। रोज.ब.रोज किराया बढ़ाया जा रहा है और सुविधाएं कम की जा रही हैं। इसी प्रकार, अन्य क्षेत्रों में भी जो निर्णय यह सरकार ले रही है, वह पूरी तरह से आम जनता के खिलाफ और देशी.विदेशी पूंजीपतियों के पक्ष में है। बुलेट ट्रेन के नाम पर जापान के साथ जो समझौता किया गया है, उससे जनता को भारी नुकसान का सामना करना पड़ेगा। मोदी जी भ्रमणशील प्रधानमंत्री हैं। जितने माह इन्हें सत्ता में आए नहीं हुए, उससे ज्यादा देशों की यात्रा कर चुके हैं। ये जहां भी जाते हैं, वहां खुले तौर उन्हें लूट का ठेका दे देते हैं। इन्हें अपने पद की गरिमा का जरा भी ध्यान नहीं है। कुल मिलाकर, इनसे अधिक घटिया प्रधानमंत्री अब दूसरा हो नहीं सकता। इनकी विदेश नीति व्यापार नीति है, जो देश के हितों के विरुद्ध है। लेकिन आश्चर्य की बात ये है कि इनका कहीं कोई विरोध नहीं हो रहा। कोई आंदोलन नहीं, कहीं कोई गतिविधि नहीं। इससे पता चलता है कि देश में राजनीतिक शून्य की स्थिति बनी ही हुई है। इसी शून्य में मोदी का उभार हुआ, जो अब अपने आपको किसी हिटलर से कम नहीं समझ रहे। भाजपा में मोदी के विरोधी यद्यपि हैं, पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का पूरा समर्थन मोदी.अमित शाह की जोड़ी को मिला हुआ है। मोदी के उभार ने भाजपा के ढांचे पर भी असर डाला है। पहले भाजपा व्यक्ति केंद्रित पार्टी नहीं थी, पर संघ ने अब इसे व्यक्ति केंद्रित बना दिया। इसका दुष्परिणाम भाजपा के लिए जो भी हो, लेकिन फ़िलहाल, पार्टी में विरोधी मतों के लिए कोई जगह नहीं रह गई है।

मुसलमान, पाकिस्तान और गाय की राजनीति करने वाली भाजपा ने मंदिर का मुद्दा भी छोड़ा नहीं है। विरोधियों को बार.बार पाकिस्तान भेजने की बात करने वालों के भगवान जब अचानक बिन बुलाए मेहमान की तरह पाकिस्तान चले गए तो इसके पीछे राज यह खुल कर सामने आया कि ऐसा उन्होंने ओबामा के आदेश पर किया। जो भी हो, जनता के सामने पोल खुल गई कि इस पार्टी का चरित्र कितना गंदा है। लोगों ने अभी यह बात नहीं भूली है कि बिहार विधानसभा चुनाव के दौरान अंतिम दांव आजमाते हुए अमित शाह ने कहा था कि अगर भाजपा हारी तो पटाखे पाकिस्तान में फूटेंगे। आज वही पाकिस्तान भाजपाइयों का मक्का बन गया और वहां के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ से बड़ा दोस्त मोदी का कोई नहीं। पर संघ की विचारधारा कितनी ज़हरीली है, यह तब लोगों को समझ में आया जब संघ से भाजपा में आए राम माधव ने अल जजीरा चैनल को इंटरव्यू में कहा कि भाजपा का सपना अखंड भारत का है, जिसमें पाकिस्तान और बांग्लादेश शामिल होंगे। जब इस पर विरोध शुरू हुआ तो भाजपा ने राम माधव के बयान से किनारा कर लिया ये कहते हुए कि ये राम माधव के व्यक्तिगत विचार हैं। जाहिर है, पड़ोसी देशों से किस तरह के संबंध रखना चाहता है संघ, जो मोदी को मोहरा बना कर देश की सत्ता पर काबिज़ है। अब पता चल रहा है कि ओबामा ने मोदी और शरीफ को एक साथ अपने पास बुलाया है। यानी वह बिग ब्रदर की भूमिका निभाएगा। कुल मिलाकर, देश को लूट तो रही थी कांग्रेस भी, लेकिन कुछ संकोच के साथ। अब मोदी के राज में संघ इस देश को निर्ममतापूर्वक लूट रहा है और अपने आकाओं को लूटने की खुली छूट भी दे रखी है। कांग्रेस भी सच्चे अर्थों में कभी धर्मनिरपेक्ष नहीं रही, लेकिन मोदी तो अब देश के धर्मनिरपेक्ष ढांचे को ही तोड़ रहे हैं। तभी जापानी पीएम शिंजो आबे के आने पर बनारस में गंगा आरती हुई और उसमें चंदन.टीका लगाकर दोनों शामिल हुए। मोदी जो भी कर रहे हैं, संघ के निर्देश पर कर रहे हैं। खुद इन्हें अक्ल नहीं। देश को इतना अनपढ़ प्रधानमंत्री आज तक नहीं मिला। संघ को जहां मौका मिलता है, वह साम्प्रदायिक एजेंडा लागू करने की कोशिश शुरू कर देता है। रावण के तो दस सिर थे, संघ के सैकड़ों हैं। यूपी में आसन्न चुनाव को देखते हुए फ़िर से वहां राम मंदिर का राग छेड़ दिया है संघ ने। शिलाएं मंगवाई जा रही हैं। फ़िर शिला.पूजन का दौर शुरू होगा। जिन लोगों को याद है 1989.91 का दौर, वे समझ सकते हैं कि शिला.पूजन का मतलब क्या होता है। यूपी में अगर भाजपा जीत जाती है, तो उसकी मुराद पूरी हो जाएगी। यूपी में मुलायम की मूर्खताओं और निष्क्रियता की वजह से यह संभव हो सकता है। मुलायम ने बिहार चुनाव में अप्रत्यक्ष तौर पर भाजपा का साथ दिया था। जहां तक पश्चिम बंगाल का सवाल है, वहां भाजपा को मुश्किल हो सकती है, लेकिन ममता की नीति भी साम्प्रदायिक ही है। इसका प्रमाण है उनके द्वारा सिर्फ मुसलमानों की रैली करना। यानी हिंदू साम्प्रदायिकता के जवाब में अल्पसंख्यक साम्प्रदायिकता। ऐसी नीतियों से आखिरकार संघ और भी मजबूत होगा। मोदी तो मुखौटा हैं, असली ताकत संघ के पास है। इस संघ की काट की सुगबुगाहट अभी कहीं दिखाई नहीं पड़ रही।

डीयर मिस्टर केजरीवाल जी

मैंने आपकी टिप्पणी कुछ दिन पहले अखबार में पढी कि ईमानदार पॉलिटिक्स के लिये विधायक की सैलरी बढनी जरूरी है। इसलिये आपने उनकी सैलरी 12000 हज़ार से 200000 लाख कर दी। तो मिस्टर केजरीवाल जी आपको मैं यही बता दूं, कि आप मूर्ख तो दूसरे को बनाना, जिसके नाम पर आपके पार्टी का वजूद है, तो आम आदमी ये जानती है कि भ्रष्टाचार रोकने के लिए आपकी ये दलील की सैलरी 2 लाख हो जाए, तो भ्रष्टाचार नहीं होगा दकियनूसी है। आप तो करने कुछ और चले थे, अब कर कुछ और रहे हो।

भ्रष्टाचार मिटाने का अगर ये तरीका कारगर है तो आम जनता की जेब क्यों काटने पर तुले हो? देश का बहुत गरीब भूखे मरने को मजबुर हैं। कारण रोजमर्रा की जरूरत वाली चीज़ों का हद से ज़्यादा मंहगा हो जाना। दाल की कीमत आसमान छू रही है, उसे तो आपने जस का तस रखा हुआ है। अब आप यह बोलेंगे कि यह केन्द्र सरकार का जिम्मा है, तो मैं आपसे पूछुंगी कि डॉ. मिस्टर केजरीवाल केन्द्र से पहले ईमानदार पॉलिटिक्स के लिये सैलरी बढाने की पहल तो आपने करी फ़िर दाम घटाने की पहल क्यूं नहीं किया आपने।

'आम आदमी पार्टी' का नाम अब बदल दीजिए केजरीवाल जी। मज़बुर आज हर इंसान है, फ़िर ये झंझट वास्ते करने वाली दलीलें आप मत किया करो और अगर कुछ करना है तो अपने बात पर अडिग रहो, पॉलिटिक्स बेईमान शब्द ही है अतीत से, ईमानदार बनना था आपको इसलिए हमने आपको मौका दिया, आज आप हमारे ही ऊपर चाकु चला रहे हो।

दो लाख की सैलरी एक आम आदमी की नहीं जरूरत होती चार व्यक्ति का परिवार चलाने को। तो आपके पार्टी का आम विधायक को क्यूं चाहिए? मैं आपके आम आदमी पार्टी की बहुत बड़ी समर्थक थी, पर आज आपके विचार और तानाशाही से परेशान हो गई हूं, और स्पष्ट विरोध करती हूं। इस विचार के सोच के साथ अपनी बात को यहीं समाप्त करती हूं कि हमारा नाम अपनी पार्टी से हटाओ। मतलब आम आदमी का नाम अपनी पार्टी से हटाओ और 'आम आदमी पार्टी' का नामकरण ''अमीर आदमी पार्टी'' कर दो।

–अलीशा ग्रेटर फ़रीदाबाद

तुर्की-ब-तुर्की / अरविंद केजरीवल की नज़र में

''हमारा कहना है–

केजरीवाल जी आपका भी जवाब नहीं। पुलिस को ठुल्ला कहते हो और उन्हीं के दम पर अपनी सम-विषम योजना को कार्यान्वित भी कराना चाहते हो। सीबीआई को टुटपूंजिया कहते हो और अपने सारे भ्रष्टाचार के बड़े मामले जांच के लिये सीबीआई को ही देते हो। इसी तरह, एक ओर आप जांच आयोगों को गीदड़ भभकी कहते हैं और दूसरी ओर स्वयं आपकी सरकार अरूण जेटली के खिलाफ़ जांच आयोग बैठाती है। समझ में नहीं आता आपके कहे को मानें या करे को।

प्रधानमंत्री को आपने मनोरोगी कह डाला। मोदी को तरह-तरह के रोग हो सकते हैं जैसे बोलने का रोग, विदेश यात्रा का रोग, जुमलेबाज़ी का रोग, सूट-बूट का रोग इत्यादि। लेकिन मनोरोग के लक्षण तो स्वयं आप में केजरीवाल जी ज़्यादा नज़र आते हैं। बैठे-बिठाय सम-विषम जैसी तुगलकी योजना दिल्ली वासियों पर थोपने को मनोरोग नहीं तो और क्या कहेंगे? हां मोदी की आप से एक समानता जरूर है-न उन्हें अपने रोग़ों का पता और न आपको।

आपने पहले शीला दीक्षित, नितिन गडकरी और मुकेश अंबानी समेत तमाम लोग़ों को सार्वजनिक रूप से भ्रष्ट कहा था। ठीक किया था। तब आपके पास सरकारी साधन भी नहीं थे। अब जब आपके पास पूरी सरकारी मशीनरी है तब भी आप भ्रष्टाचार खत्म करने का मॉडल नहीं दे पा रहे। यानी आपकी नज़र में भी लोकपाल बराबर जोकपाल ही हुआ। आपके विरोधियों की नज़र में अरविंद केजरीवाल बराबर कानखजूरा हैं। वे भी इसका कोई प्रमाण नहीं देंते। कहीं इसी लिये तो आप लोकपाल को नहीं ला रहे कि उसके सामने आपके कानखजूरा होने के प्रमाण दिये जा सकते हैं।

वैसे आपकी नज़र में और मोदी की नज़र में भेद उस दिन से ही खत्म होना शुरू हो गया था जब आपने भी अपने मार्गदर्शक मंडल को मात्र दर्शक बना कर छोड़ा था। मोदी ने तो तब भी उन्हें 'सम्मानित' कुर्सियां अता की थीं, आपने तो पिछवाड़े पर लात मार कर अपनी जिद पूरी की थी। यानी मार्गदर्शक मंडल बराबर कबाड़खाना। जो मोदी की नज़र में वही केजरी की नज़र में।